भूमिका

प्रेरणा और पृष्ठभूमि

भारत पर शासन करने वाले अधिकांशतः शासक भारत के ही थे, किंतु कुछ बाहरी देशों के लोगों ने भी भारत में आकर अपना शासन स्थापित किया। अंग्रेज उन्हीं बाहरी लोगों में से एक थे। ऐतिहासिक दृष्टि से आकलन किया जाए, तो लंबे समय तक ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया और 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम के बाद उन्होंने लगभग डेढ़ शताब्दी इस देश पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व बनाए रखा। साम्राज्यवाद और उसके अंतर्गत उपनिवेशवाद के आक्रमण की इस घटना का भारत के सांस्कृतिक तथा राजनैतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। जब अंग्रेजी शासन पूरी तरह से प्रभावी हो गया, तो भारतीय समाज पर ब्रिटिश और पाश्चात्य समाज की संस्कृति का प्रभाव पड़ना प्रारंभ हो गया। इतना ही नहीं, बल्कि अंग्रेजों के राजनैतिक प्रभाव के कुछ अन्य परिणाम भी सामने आए। इन्हें हम शिक्षा, वैचारिक परिवर्तन, राजनैतिक चेतना, सामाजिक बदलाव आदि अनेक क्षेत्रों से जोड़ कर देख सकते हैं। माना जाता है कि इन परिवर्तनों की महत्वपूर्ण भूमिका 'आधुनिक भारत' की नींव डालने में रही। इनका गहरा संबंध 'भारतीय नवजागरण' से भी है।

नवजागरण काल में पाश्चात्य साहित्य और ज्ञान विज्ञान ने विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अंग्रेजों ने जब भारत को अपना उपनिवेश बनाया, तो उनको अपने साम्राज्य के संचालन में भाषाई समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस समस्या को दूर करने के लिए उन्होंने अंग्रेजी भाषा का प्रचार किया, नौकरियों में अंग्रेजी

को अनिवार्य भाषा बनाया और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति लागू की। अंग्रेजों के हित-साधन के साथ ही इसका एक परिणाम यह भी हुआ की भारत के लोग अंग्रेजी भाषा के माध्यम से यूरोपीय ज्ञान, विज्ञान के संपर्क में आए। इससे भारत में नवीन बौद्धिक चेतना का विकास हुआ, जिसने वैचारिक क्रांति को जन्म दिया। आधुनिक भारत की राजनैतिक चेतना का विकास इसी वैचारिक क्रांति का एक उल्लेखनीय परिणाम है।

नवजागरण काल में होने वाले समाज-सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ ही राजनैतिक चेतना के विकास में अनुवाद की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अनूदित पाठों ने जहाँ भारतीयों को पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराया, वहीं भारतीय भाषाओं के अनूदित साहित्य ने प्राचीन भारत की संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया। इन अनूदित पाठों ने भारतीय समाज को एक नवीन वैचारिक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जिसका परिणाम भी देखने को मिला। इसका एक उदाहरण यह है कि 1865 ई. में विष्णुशास्त्री पंडित ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर कृत 'विधवा-विवाह' का मराठी में अनुवाद किया और इस रचना से प्रेरित होकर स्वयं एक विधवा महिला से विवाह किया।

भारतीय भाषाओं में अनुवाद की प्राचीन परंपरा है, जिसका अध्ययन इस शोध कार्य की सीमा में नहीं आता। इसके बावजूद शोध-सीमा के पूर्व के एक अनुवाद का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। यह अनुवाद 1813 ई. में आत्माराम शर्मा द्वारा असमीया भाषा में किए गए 'बाइबिल' के अनुवाद के रूप में उपलब्ध है। इसका महत्व यह है कि इसके माध्यम से ही असम प्रांत में ईसाई धर्म के प्रचार की शुरुआत हुई। इससे अनुवाद के प्रभाव का अनुमान किया जा सकता है। असमीया कवि गुणाभिराम बरुआ ने बंकिम चंद्र चटर्जी की रचना 'वंदेमातरम्' का अनुवाद किया। असमीया भाषा में ही हेमचंद्र बरुआ ने 'स्वास्थ्य रक्षा नियम' नामक पुस्तक के रूप में अंग्रेजी से अनुवाद किया था। नवजागरण काल में दोरस्वामय्या ने 1899 ई. में बंकिम के उपन्यास 'कपालकुंडला' का 'कपालकुंडलिनी' नाम से बंगला से तेलुगु भाषा में अनुवाद किया। इसी प्रकार वीरेशलिंगम पंतुलु ने 1881 ई. में शेक्सपियर के नाटक 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' का 'चमत्कार रत्नावली' नाम से अंग्रेजी से तेलुगु भाषा में अनुवाद किया। भारत की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद कार्य के इसी प्रकार के अनेक उदाहरण खोजे जा सकते हैं। इन सबका विस्तृत विवरण देने के स्थान पर यह कहना उपयोगी होगा कि उस काल में विपुल संख्या में जो अनुवाद कार्य किया गया, उसने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया। अंग्रेजी शासन में भारतीय जनता को किसी तरह के राजनैतिक अधिकार नहीं प्राप्त थे और जनता को राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति का आशय था ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त करना। इस दृष्टि से अनुवाद की भूमिका और भी अच्छी

तरह समझी जा सकती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में नवजागरण काल के अनूदित पाठों में उपलब्ध उस वैचारिक उथल-पुथल का विश्लेषण किया गया है, जिसने भारतीय समाज के अंदर राजनैतिक चेतना का विकास किया।

शोध की केंद्रीय समस्या एवं प्रश्न

प्रस्तुत लघु शोध विषय की केंद्रीय समस्या **'नवजागरणकालीन राजनैतिक चेतना के विकास में अनुवाद की भूमिका' (सन् 1850 से 1900 ई.)** का विश्लेषण करना है। इस शोध समस्या से संबंधित प्रश्न निम्नांकित हैं :

- नवजागरण काल में जो परिवर्तन हुए, उनके मूल में कौन-सी परिस्थितियाँ थीं और उन्होंने उस काल की समग्र चेतना को किस रूप में प्रभावित किया?
- नवजागरणकाल में मौलिक साहित्य-सृजन के अतिरिक्त अनुवाद के क्षेत्र में जो क्रांति आई, उसके मूल में कौन-से कारण थे तथा भारतीय और विदेशी भाषाओं से हिंदी में कितना अनुवाद कार्य किया गया?
- नवजागरण काल के हिंदी में अनूदित साहित्य ने जिस सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक और वैचारिक चेतना का विकास किया, उसका तत्कालीन राजनैतिक चेतना के विकास से क्या संबंध है?
- नवजागरण काल के हिंदी में अनूदित साहित्य में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के यथार्थ को किस प्रकार और किन रूपों में प्रस्तुत क्या गया है?
- नवजागरण काल के हिंदी में अनूदित साहित्य ने भारतीय जनता को किस प्रकार अपने अधिकारों और स्वाधीनता के प्रति सचेत किया?
- समग्र रूप से नवजागरण काल की राजनैतिक चेतना के निर्माण में हिंदी में अनूदित साहित्य ने क्या भूमिका निभाई?

शोध का उद्देश्य

- शोध की केंद्रीय समस्या और उससे जुड़े प्रश्नों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
- नवजागरण काल (1850-1900 ई.) में उपलब्ध अनूदित सामग्री का विवरण तैयार करना।
- अध्ययन एवं विश्लेषण के आधार पर उपलब्ध निष्कर्षों के आलोक में इस क्षेत्र में भावी शोध कार्य की संभावनाओं का पता लगाना।

सामग्री संकलन

प्रस्तुत शोध विषय के लिए सामग्री का संकलन मुख्यतः पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों, शोधग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं व विभिन्न वेबसाइटों से किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

अनुवाद अनुशासन में प्रस्तावित शोध विषय पर केंद्रित कोई शोध कार्य किसी शोध उपाधि के लिए अभी तक देखने में नहीं आया है। हिंदी साहित्य में नवजागरण काल पर केंद्रित शोध और समालोचनात्मक कार्य अवश्य हुए हैं। सुश्री सिसिलिया मडाङ् का एम.फिल. उपाधि हेतु किया गया लघु शोध कार्य, "नवजागरण कालीन हिंदी एवं मणिपुरी कविताएँ" इन्हीं में से एक है। यह नवजागरण काल के परिप्रेक्ष्य में दो भाषाओं की कविताओं के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इसमें अनुवाद की भूमिका का विश्लेषण नहीं किया गया है। इसके अलावा सुश्री अनुराधा पाण्डेय का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में एम.फिल. उपाधि हेतु किया गया लघु शोध कार्य "हिंदी नवजागरण में अनुवाद की भूमिका (1857-1947 ई.तक)" भी अनुवाद अनुशासन से जुड़ा हुआ है। इस शोध कार्य में भारतीय नवजागरण और हिंदी साहित्य, हिंदी नवजागरण और अनुवाद तथा हिंदी नवजागरण में अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इस शोध कार्य में नवजागरणकालीन राजनैतिक चेतना का कोई विश्लेषण नहीं किया गया है। अनुवाद और राजनैतिक चेतना के संबंध पर भी इस शोध कार्य में कुछ नहीं कहा गया है। हिंदी विद्वानों ने समय-समय पर नवजागरण और साहित्य के बारे में लखा है। समालोचना के प्रतिष्ठित विद्वान्, डॉ.रामविलास शर्मा के 'भारतेंदु युग और हिंदी साहित्य की विकास परंपरा' और 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण' में भारतीय नवजागरण का विश्लेषण प्राप्त होता है, जिससे शोधार्थी को अध्ययन दृष्टि के विकास में सहायता मिली है। हिंदी साहित्येतिहासकारों के इतिहास ग्रंथों में भी नवजागरण काल के संबंध में सामग्री उपलब्ध है। उससे भी शोधार्थी को सहायता मिली है, लेकिन उसे कहीं भी राजनैतिक चेतना के विकास में अनुवाद की भूमिका का मूल्यांकन देखने को नहीं मिला। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शोधार्थी का संदर्भित विषय पर किया गया यह कार्य नवीन और मौलिक है तथा अब तक की जानकारी के अनुसार अनुवाद अनुशासन में पहला है।

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत लघु शोध कार्य की सीमा निम्नलिखित बिंदुओं के अध्ययन तक सीमित है-

1. नवजागरण काल (सन् 1850 से 1900 तक) में भारतीय समाज में आई राजनैतिक चेतना का स्वरूप।
2. संदर्भित अवधि में विकसित राजनैतिक चेतना के विकास में अनुवाद की भूमिका।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत लघु शोध कार्य के अंतर्गत अनूदित पाठों के अंतर्निहित तथ्यों के विश्लेषण के लिए विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है। इसके अलावा आवश्यकतानुसार विवरणात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक शोध प्रविधियों का प्रयोग भी किया गया है।

शोध-कार्य का परिचय

प्रस्तुत लघु शोध कार्य को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत नवजागरण को परिभाषित करते हुए भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि और उसके विकास के वैचारिक, शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि पक्षों का विवेचन किया गया है। इसी के साथ शोध की केंद्रीय समस्या, उससे जुड़े प्रश्नों और आवश्यक विश्लेषण हेतु आधार सामग्री के रूप में, नवजागरण काल में हिंदी भाषा में अनूदित पाश्चात्य व भारतीय साहित्य की सूची इस अध्याय में प्रस्तुत की गई है। इसके लिए सामग्री का विधा के अनुसार वर्गीकरण करके प्रस्तुति के लिए सारणी पद्धति का प्रयोग किया गया है ।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत साम्राज्यवाद की प्रवृतियों का विवेचन किया गया है। इसकी सहायता से आय विश्लेषित किया गया है कि नवजागरणकालीन अनूदित पाठों ने साम्राज्यवाद की विभिन्न प्रवृतियों के वास्तविक रूप से जनता को किस प्रकार परिचित करवाया और किस प्रकार आम जनता में साम्राज्यवाद के विरुद्ध जागरण आया। साम्राज्य विस्तार के स्वरूप के साथ ही उसके विस्तार में यातायात के साधनों की भूमिका, जनता के प्रति शासन के उदासीन रवैये और साम्राज्यवादी कूटनीति आदि का अनूदित पाठों के आधार पर विश्लेषण करते हुए भारतीय समाज में राजनैतिक चेतना के विकास का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत भारतीय समाज की तत्कालीन सामाजिक स्थितियों पर विचार किया गया है। इसके अंतर्गत नवजागरणकालीन अनूदित पाठों में चित्रित सामाजिक संरचना, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, समाज में जातिगत स्थिति, शैक्षिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, व आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करके उनमें आने वाले परिवर्तन के माध्यम से जनता की मानसिकता में होने वाले बदलाव को रेखांकित किया गया है तथा राजनैतिक चेतना से उसके संबंध का विवेचन व मूल्यांकन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत नवजागरण काल में अनूदित साहित्य द्वारा भारतीय समाज में भाषाई चेतना और वैचारिक चेतना के विकास का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय की सामग्री से पता चलता है कि अनुवाद ने भारतीयों के मन में न केवल भाषा के प्रति जागरण पैदा किया, बल्कि भाषिक विकास की दृष्टि भी विकसित की। इसी प्रकार यह भी पता चलता है कि वैचारिक विकास का भी अनुवाद से गहरा संबंध है। राजनैतिक चेतना के विकास में भाषा और विचार की उल्लेखनीय भूमिका का विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

विवेचन और विश्लेषण की प्रामाणिकता के लिए संदर्भ सामग्री तथा परिशिष्ट स्वतंत्र रूप से जोड़े गए हैं।

संभावनाएँ और उपयोगिता

प्रस्तुत लघु शोध कार्य कई संदर्भों में संभावनाशील और उपयोगी सिद्ध होगा। यह अनुवाद को राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में एक नवीन आयाम देगा और नवजागरण काल की चेतना के विविध पक्षों को अनुवाद से जोड़ कर अनुवाद कार्य के मूल्यांकन को प्रोत्साहित करेगा। इस कार्य से नवजागरणकालीन राजनैतिक चेतना और वर्तमान राजनैतिक चेतना में अनुवाद की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सकेगा। इससे अनुवाद अनुशासन को विस्तार पाने का अवसर प्राप्त होगा। यह शोध अनुवाद को राजनैतिक चेतना के विस्तार के मूल्यांकन के एक समर्थ उपकरण के रूप में स्थापित होने में सहायता करेगा। यह भारतीय समाज की नवजागरणकालीन राजनैतिक चेतना के प्रमुख तथ्यों व भाषाई स्थिति के अध्ययन के नए पक्षों के विवेचन के लिए अन्य शोधार्थियों को प्रेरित करेगा। इस शोध के माध्यम से यह पता लगाने में भी सहायता मिलेगी की उस समय के कौन-कौन से अनुवाद राजनैतिक चेतना के संदर्भ में प्रभावशाली थे।

निवेदन

प्रस्तुत शोध कार्य शोध की केंद्रीय समस्या को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा संकलित हिंदी में अनूदित पाठों की सहायता से किया गया है। उसने पूरी ईमानदारी और परिश्रम से यह शोध कार्य किया है तथा मौलिकता का पूरा ध्यान रखा है। इतना होते हुए भी शोधार्थी की कार्य क्षमता और ज्ञान की सीमा होती है, अतः उसके शोध कार्य में अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी, जिसके लिए वह विद्वानों से क्षमा प्रार्थी है। शोधार्थी भविष्य में अनुवाद अनुशासन को राजनीति विज्ञान से जोड़कर कार्य करने के लिए वचनबध्द है।

शोधार्थी द्वारा अपना यह लघु शोध कार्य पूरी निष्ठा और विश्वास के साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की एम.फिल. उपाधि हेतु निर्धारित प्रक्रिया में सम्मिलित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

शोधार्थी
आशुतोष कुमार विश्वकर्मा
(एम.फिल.)अनुवाद अध्ययन
पंजीयन सं : 2015/04/219/006

दिनांक :